भद्रकाली मन्दिर, कुरुक्षेत्र

यह पवित्र स्थल कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से 4 किलोमीटर दूर झांसा मार्ग पर स्थानेश्वर महादेव मन्दिर की विपरीत दिशा में स्थित है ।

यह दुर्गा जी का एक नाम है । महाभारत के भीष्म पर्व मे यह वर्णन है कि अर्जुन ने इस नाम से वरदायिनी दुर्गा जी की स्तुति की थी ।

(महाभारत, भीष्म पर्व, 23/5)

महाभारत के शान्ति पर्व में यह वर्णन है कि ये दक्ष के यज्ञ-विध्वंस के समय पार्वती के कोप से प्रकट हुई थी ।

(महाभारत, शान्तिपर्व, 264/53-54)

महाभारत के शल्य पर्व में यह भी वर्णन है कि यह स्कन्द की अनुचरी एक मातृका थी :

(शल्य पर्व, 46/11)

मां भद्रकाली मन्दिर में स्थित पवित्र कूप, सती कूप एवं देवी कूप के नाम से विख्यात हैं ।

ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार यह सिद्धपीठ सम्पूर्ण भारतवर्ष की इक्यावन सिद्धपीठों में से एक है । पौराणिक कथानक के अनुसार दक्ष के यज्ञ में अपने पति भगवान शंकर का भाग न देखकर तथा अपने पिता दक्ष को शिव की निन्दा करते हुए सुनकर दुखी एवं क्रोधित हुई सती ने यज्ञ कुण्ड में ही अपनी देह का त्याग कर दिया । जब भगवान शिव को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने वहां आकर सती की मृत देह को अपने कन्धे पर धारण किया तथा उन्मत्त भाव से नृत्य करते हुए वे तीनों लोकों में भ्रमण करने लगे । शिव की ऐसी दशा को देखकर भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शरीर को विभाजित कर दिया । विभक्त अवस्था में सती की देह के इक्यावन टुकड़े हुए । जिन-जिन स्थानों पर ये देहावशेष गिरे उन्हीं स्थानों पर शक्तिपीठ स्थापित हुए । कुरुक्षेत्र स्थित इस तीर्थ में सती की देह के दाहिने पावं की एड़ी गिरी थी जहां सावित्री देवी एवं स्थाणु भैरव प्रकट हुए । यह तीर्थ वही महान शक्तिपीठ है :

कुरुक्षेत्रऽपरो गुल्फ: सावित्री स्थाणु भैरवम् ।
गत्वा सुशोभिते नित्यं देव्या: पीठो महान्भुवि ।।

जन साधाारण में इस तीर्थ के प्रति अथाह श्रद्धा देखने को मिलती है । प्रचलित मान्यता व विश्वास के अनुसार जो व्यक्ति देवी कूप पर जाकर मां भगवती के सामने कोई कामना करता है तो उसकी वह कामना मां की कृपा से शीघ्र ही पूर्ण हो जाती है । मनस्कामना के पूर्ण होने पर भक्तगणों के द्वारा यहां मिट्टी के अश्व चढ़ाए जाते हैं ।

लोक प्रचलित विश्वास के अनुसार यह वही स्थान है जहां महाभारत युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध में स्वयं की विजय तथा शत्रुओं की पराजय हेतु शान्त एवं पवित्र चित्त से श्री दुर्गा स्तोत्र का पाठ करने को कहा । यह सुनकर अर्जुन ने अंजलिबद्ध होकर मां भगवती की स्तुति की जिससे प्रसन्न होकर मां भगवती ने अर्जुन को अजेय होने का वरदान दिया ।

इस तीर्थ पर दशहरे के अवसर पर विशाल मेले का आयोजन किया जाता है । नवरात्रों के अवसर पर भी इस तीर्थ पर श्रद्धालुजनों की अपार भीड़ उमड़ पड़ती है ।

हरियाणा की यह अति प्राचीन सिद्ध पीठ, थानेसर शहर की झांसा रोड पर चुंगी के निकट स्थित है । मां भद्रकाली के प्रांगण में स्थित पवित्र कूप, सतीकूप एवं देवीकूप के नाम से विख्यात है । पौराणिक कथानक के अनुसार यहां पर सती के दाहिने पांव की एड़ी गिरी थी । ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार यह भारतवर्ष के 51 शक्ति पीठों में से एक है । इस शक्तिपीठ का नाम सावित्री पीठ है तथा इस से सम्बन्धित शिव पीठ का नाम स्थानेश्वर है । ऐसी मान्यता है कि जो व्यक्ति देवी-कूप पर जाकर मां भगवती के सामने कामना करता है तो उसकी कामना शीघ्र पूरी हो जाती है । मनस्कामना के पूर्ण होने पर भक्तगणों के द्वारा यहां मिट्टी के अश्व चढ़ाये जाते हैं । श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार बचपन में भगवान कृष्ण का मुण्डन संस्कार भी इसी मन्दिर में हुआ था ।